4.

"सबके साथ सबका विकास"

दुनिया में कई तरह का लोग है। वह अलग अलग परिवार के हिस्सा होके भी, अलग तरह में दुनिया को देखके भी साथ इस संसार में रहते है, कुछ लोग एक ही काम करते है। एक साथ बिना किसी भाव-भेद से। इस विचार उनको आगे ले जाते है। अगर कुछ काम सब एक साथ करें तो सब कुछ आसान ही नहीं बल्की अच्छा भी हो जाता है। इस काम में अगर विजय प्राप्त करना हो तो हमें मन से जाती, रंग, देश, वर्ग, धन, स्थान आदी बातों को हटाके 'इंसानियत' को अपनाना होगा। तब ही भलाई होगी सबकी और खुशी रहेगी हर दिलों में।

हम भारतीयों का प्रतिज्ञा यह है कि 'हम एक है।' हमारी देश में करोडों लोग जीते है। उनकी सोच अलग है, संस्कार अलग है, परंपरा अलग है जीवन की रास्ता भी बहुत अलग है। लेकिन, हम एक है क्योंकि हम भारत के निवासी है। भारत माता हम सबकी माँ है। इस सोच ही हमें एकता में लाएगी।

अगर सब साथ साथ कोशिश करें तो एक पहाड़ को भी उड़ा सकते हैं। मतलब एकता का ~~$~~ एहसास अगर हर मन में हो तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है। ~~सब~~ सब कुछ हम कर सकते हैं। अगर किसी शख्स को एकता सीखना है तो वो जल्द ही चींटियों के पास जाए। उनकी ~~तरह~~ एकता ~~केखाना~~ ~~को~~ देखके हम समझ सकते हैं कि जो हम हमारी सहजीवियों के साथ कर रहे हैं, क्या वो सही है या गलत। एक चींटी को अगर खाना मिल जाए तो वह अपना साथियों को भी बुलाता है। और मिली हुई खाना सबके साथ बाँटता है। यही तो एकता का असली मतलब है। ~~मन~~ हमारी मन में अपना अपना विचार नहीं बल्कि दूसरों का भी विचार होना चाहिए। ~~दूसक~~ हमें दूसरों का सुख, दुख सबकुछ समझकर बात करना होगा। जब ऐसे करते हैं तो तब उनकी मन में हमारे लिए प्यार और सम्मान, बहुमान होगा। इस सोच हमारे बीच एकता का एहसास दिलाएगी।

जब हम सबके साथ ऐसे प्यार का और एकता का व्यवहार करेंगे तो समूह में एकता बढ़ेगा। ये समूह में एक साथ अच्छा काम करने की प्रेरणा हमें देगी। ऐसे हमारी समाज और समूह उन्नातीयों में पहुँच जाएगी। एकता के साथ, एकता की रास्ते में चलनेवाली देश बहुत कुछ अच्छा कर पाएगी। हमारी देश भी इस संसार की बड़े और प्राप्त देशों के साथ ही गिन जाएगा।

पहले बताए हुए बातों का आदिस्थान तथ मूलकारण होना चाहिए हमारा सोच। अगर हमारी सोच अच्छा हो तो सब कुछ अच्छा है। हम कुछ करने केलिए सोचते हैं, इसलिए तो कुछ करते है। किए हुए काम भलाई का हो तो बहुत अच्छा है। लोग हमें देखकर पढ़ेंगे, हम जैसे अच्छाईआँ करने लगेंगे; तब हमारे साथ काम करेंगे सबकी भलाई केलिए। तब देश-समूह विकास को प्राप्त करेगा। हर दिलों मे इंसानियत, प्यार, और करुणा भी बढ़कने लगेगी। यही तो एक इंसान की जन्म का उद्देश्य है।

हमारा देश विकास का प्राप्त कर रहे हैं। लेकिन समूह की कुछ कोनों में आज भी असमता की ~~सम~~ सूखी हवा चलती है। ~~सम हम~~ जाती, रंग, देश, परिवार, परंपरा आदी के नाम पर आज भी लोगों को अपनी अवकाशों निषेध की जाती है - और उन्हें सब कुछ सहकर गरीब और कष्ट का ज़िन्दगी जीना पड़ रहा है। यह समस्याएँ ही समूह में अनेक ~~m~~ गलत करनेवालों को बनाता है। क्योंकि उन्हें जीने केलिए कोई दूसरा रास्ता नहीं पता। ~~म~~ और अच्छी तरह जीने की क्षमता और योग्यता होके भी ~~उनको~~ उनको एसे जीने की अनुमति नहीं देते हैं। इन्हें सबसे बुरा और ~~नीचे~~ नीच समूह माना जाता है ~~सम~~ वो लोग जो ज़ुबान से कहते ~~अ~~ हैं कि हम सबसे ऊँच ~~अ~~ हैं और असल में ~~दिल~~ दिल से और दिमाग से सबसे छोटे हैं।

एसे, कुछ लोगों का सोच बहुत सी लोगों का जीवन तबाह कर देता है। उनकी सपनों को बढ़ने से पहले ही तोड़ देती हैं।

ऊँच-नीच का भाव ~~व~~ भेद नहीं, बल्कि हर मन में, हर दिल में, हर इंसान में एकता का, समता का, प्यार का और करुणा का मनोभाव और विचार होने की ज़रूरत है।

असमता के कारण समूह से दूर ~~का~~ भगाए हुए एक ~~जनता~~ है हाशिए पर लगे लोग। उनकी ज़िन्दगी बहुत कड़वा है क्योंकि ~~क~~ समाज के बड़े बड़े लोगों ने अपने बल से और अधिकार ~~से~~ उनकी अवकाशों ~~को~~ ~~प~~ का निषेध करके, नियमों का उल्लंघन करके ~~स~~ सब कुछ अपनाता है। यह समस्या जानते हुए भी कोई भी आज तक आवाज़ नहीं उठाया है। क्यों? क्योंकि सब जानते हैं कि ~~अ~~ अगर उनके प्रति कुछ बोला तो गर्दन के ऊपर सिर नहीं होगा। ~~जो~~ ~~लोग~~ लेकिन कुछ लोग इस कठिन और बुरी समस्या के प्रति आवाज़ ~~उ~~ उठाया लेकिन वे आज नहीं रहे। यह सबका मूल कारण असमता और लोगों के बीच एकता का न होना ही है। ~~ह~~ यह बात सही है या गलत? खुद पूछके देखिए। अगर हर एक व्यक्ति समूह में सारी इन समस्याओं के प्रति ~~आवाज़ उठाकर~~ एक

साथ आवाज़ ~~उठाके~~ उठाके देखें, तब से यहाँ, कहीं भी कुछ भी बुरा नहीं होगा।

~~अंधेरे~~ अंधेरे में हमें अकसर डर लगता है। लेकिन अगर हमारे साथ कोई हमें ~~रोज~~ रोशनी दिखाने केलिए हो तो हमें उतना डर नहीं लगेगा ~~जितना~~ जितना हम ~~अकेले~~ होने पर महसूस करते हैं। और अगर हमारे साथ बहुत सारे लोग हो तो हम बिना डर के आगे बढ़ सकते हैं। चाहे ~~वो~~ हम जितना भी कठिन अंधेरे के बीच ~~क्यू~~ क्यों न हो। वैसे ही अगर हमारे साथ ~~..~~ खड़ा होने केलिए, ~~हो~~ संसार की - समाज की असमताओं के साथ लड़ने केलिए ~~बहुत~~ सब लोग हो तो हम सब कुछ आसानी से कर पाएँगे। इसकेलिए एकता का एहसास होने की ज़रूरत ही है।

जब सब एक साथ ~~अ~~ असमता को फैलानेवाले बातों को, समस्याओं को समाज से हटाएगा, या उनका नाश कर देगा, तब ही उन्नती होने लगेगी। तब ही ~~हमारे और ही~~ हमारा देश का विकास होगा।

'एक इंसान' ~~से~~ परमेश्वर का सबसे श्रेष्ठ सृष्टि है। उन्होंने इंसानों को सब कुछ करने की क्षमता दिया है। ~~एक साथ~~ अच्छी बातें सोचने के लिए मन और करने के लिए शरीर सब कुछ। ~~लेकिन~~ इंसान बहुत कुछ करते हैं। लेकिन एकता का विचार से नहीं। वह सोचता है कि अपने लिए क्या करें? अपना परिवार के लिए क्या करें? ~~और~~ धन बढ़ाएँ कैसे? लेकिन ~~वह~~ ~~[illegible]~~ यह सोचते समय हमारे देश की हालत के बारे में नहीं सोचती है। भूख और प्यास से रोनेवाले बच्चों का, ~~[illegible]~~ बीमारी से दर्द सहनेवालों का, और जाने ~~[illegible]~~ के लिए कोई ~~जगह~~ जगह भी नहीं उनका हालत वह नहीं समझता या सोचता। अगर इस तरह -इसी रास्ते में सोच ~~वह~~ बदलेगा तो ही ~~[illegible]~~ काम भी बदलेगा। ऐसी एक ~~बदलाव~~ ~~[illegible]~~ बदलाव ही ~~[illegible]~~ हर मन में करुणा ~~की~~ बनाएगी जो समता की रास्ता दिखाएगी। ~~नरेश सक्सेना ने~~ विनोद कुमार शुक्ला ने अपनी कविता पर कहा है कि 'दो मनुष्यों के बीच मानवीय मूल्यों का, या मानविकता का एहसास होना ज़रूरी है। जानकारियाँ ज़रूरी नहीं है'।

जब दो लोग एक तरह सोचेंगे तब ही एक साथ काम करेंगे। इसकेलिए पहले हमें सबकी दिलों में एकता का एहसास दिलाना होगा। उसके बाद जब सबको एक एहसास आएगा कि हम एक है, हमें एक साथ काम करना चाहिए - तब हम अपने आप समूह की उन्नती केलिए कुछ करने लगेंगे। वैसे जब हर लोग करने लगेंगे तो हम विकास प्राप्त करने लगेंगे। फिर समाज की उन्नती के साथ-साथ हर शख्स का भी उन्नती होगी। प्यार का और एकता का रास्ते पर चलनेवालों का कभी हार नहीं होती। 'बाईबल' इस बात की एक सच्चा उदाहरण है।

एकता का मार्ग ही हमें आज़ाद किया। उस रास्ते ने हमें स्वतंत्रता दिलाई। हम भारत के आम जनते से लेकर बड़े बड़े लोग भी एक साथ भाषा, देश, रंग, जाती, वर्ग आदी को देखके बिना एक साथ हमारी आज़ादी के-लिए लड़ा। उनकी एकता का ~~मीठ~~ मीठा फल है वही है जो हमें 15 आगस्त 1949 को मिला। अगर एक साथ रहो, और एक साथ बड़ो तो सब कुछ हो सकता है - इस बात का इससे बड़ा उदाहरण कुछ और नहीं है।

4

'रहो एक साथ, करो सब एक साथ, लड़ो एक साथ, तब मिलेगा विजय', तब प्राप्त होगा विकास।' इस मंत्र को मन में रखकर इस कदन की मतलब समझकर अगर ~~अ~~ अच्छाई करोगे तो सबको होगा फलाई। इंसान को इंसान की तरह देखना चाहिए। दूसरों को हमारी अपना समझना चाहिए। तब समाज ही नहीं पूरी दुनिया में अच्छाई होगी। बुराई का नाम और निशान भी मिट जाएगी। तब आसमान में एकता का रोशनी, ~~३~~ ज़मीन पर प्यार की हरियाली और हर दिलों में करुणा और समता का ठंडक भी होगा।

जय हिंद

5

Code No. 5

विषय: सबके साथ सबका विकास

अगली ज़माना, एकता की उदाहरण बनाएगा

धरती पर रहनेवाली जंतुओं से मानव एक अलग जन्था है। जानवरों के पास न होते गुणों मनुष्य को मिलते है। मानव का बुद्धी अलग जानवरों को भी ऊपर है। लेकिन इस मानव के साथ एक बुरी चिंता है। वह भेदभाव है। धरती में रहनेवाली मनुष्य के साथ दो विभाग है, ऊँच वर्ग और निम्न वर्ग। इस भेदभाव मानव के विकास से एक बड़ा बाँधा बनगया है। मनुष्य अपने वर्ग को नहीं प्यार करते हैं।

एकलोग आजकल बहुत प्रमुख चर्च विषय है। क्योंकि मनुष्य के पूर्ण विकास बनाने केलिए मानव के पास एकता होने बहुत ज़रूर है। इस एकता बनने का अच्छा मार्ग है, एकलोग मानव का बुनियादी कार्यों का विकास है मनुष्य का विकास। इसके लिए सभी मानव का प्रयत्न बहुत अनिवार्य है

भारत एक विशाल देश है। यहाँ एकसौ तीस से अधिक लोग रहते है। इनको भौतिक आवश्यकता

के पूर्ति केलिए भारत सरकार का दायित्व है। लेकिन भारत के समाज में जाति प्रथा है। वे अलग अलग जातियाँ बनकर कुछ जातियाँ ऊँच और कुछ जातियाँ निम्न जैसे बनते हैं। इस कारण से भारत के सभी नागरिक के विकास, भारत सरकार को बहुत दिक्कत होते हैं। आज भी भारत के हिस्सों ने अपने नाम भी लिखने नहीं समझने वाला आदमी रहते हैं। सरकार के किन्हीं आनुकूल्य वह नहीं देते हैं। इसके जैसे संभव विकासों को छोड़ना भारत का संपूर्ण विकास केलिए बहुत ज़रूर है।

पश्चात्य देशों जैसे अमेरिका, ब्रिटण और हमारा पड़ोसी देश चैना से इस भेदभाव नहीं है। वहाँ मानव एकसाथ बहुत प्यार से रहते हैं। इसके कारण उस देशों से मनुष्य बहुत विकास होते हैं। उसको जीविन अंतरीक्ष बहुत आसानी है। लेकिन भारत का अंतरीक्ष बहुत दिक्कत है। अन्य देशों से लोग ज्ञान को बहुत प्रमुखता लेकर वह जीवित के अंत से ज्ञान सीखने गए है। इससे वह एकता और नागरिक बोध से समझते है लेकिन भारत से सभी को ज्ञान सीखने का मौका

नहीं मिलते हैं। अन्य देशों से देख भारत भी इसी तरह चलने के वक्त हम भी इसी तरह विकास होना, एक सत्य है। ~~धरम~~ धरती के सभी लोग के जीवित ऊपर उठने की सबका मदद अनिवार्य है।

सभी विकास होते के वक्त का आसनी और गुणों

सबके लिए ज्ञान सीखने का मौका मिला और इससे उस देश भी विकास होते हैं।

सबके लिए काम मिलते है और इससे देश का आर्थिक स्थिति ऊपर उठते हैं।

अन्य देशों का आश्रय करने को छोड़कर अपने प्राप्ती बनते हैं।

अंतराराष्ट्र बाज़ार में देश का मूल्य बदल करते हैं।

देश की अनुकूल्य सबको मिलते हैं।

देश पर प्यार और समाधान भरते हैं और भेदभाव बस कराते हैं।

प्रजातंत्र आसनी से चलते हैं।

मनुष्य का विकास एकता से ~~है~~ है बोलती एक युगाचार्य है श्री नारायण गुरु। उसका ~~का~~ प्रवर्तन का नतीजा है आज केरल का विकास की कारण। उसके जैसे मानवों ~~ह~~ का आवश्यकता आज बहुत बड़ा है। उसका ~~प्रशस्त~~ प्रशस्त ~~की~~ उपदेश "एक जाति, एक वर्ग मनुष्य को" आज भी बहुत प्रमुख है। वह ~~व~~ आज उठने वाली आशय एकलोग बनने ~~के~~ केलिए अपने जीवित छोड़ने एक महारथी है।

आज मनुष्य के साथ समभावना होना बहुत ज़रूर है। ~~ल~~ लेकिन आज मनुष्य प्यार उपेक्षा करने और ~~ऐसे~~ इस्लामिक स्टेट जैसे जत्थे रूपित मनुष्य को मार डाले और धरती से दया की मूर्ति को छोड़ देते हैं। इस जत्थे को उन्मूलन करना सबको एक साथ रहने की कार्यक्रम से पहला मार्ग है।

एशिया का बड़ी कला त्योहार 'केरल स्कूल कलोत्सव' एकता और मनुष्य की कला की विकास के संदेश दिलाते हैं। ~~जाति~~ जाति, वर्ग लेकिन भारत स सभा [illegible]

5

वर्ण को छोड़कर वहाँ सभी कला को प्राधान्य देकर मनुष्य का विकास को एक अच्छा नमूना देख रहे थे। इससे जैसे ओलिंपिक्स, कोमण ~~वेल्त~~ वेल्त खेलों आदि मानव विकास के लिए शुरू आत किया है।

भारत के समाज में एकता के बदले आज भेदभाव देखते एक बुरा असर है। इसको उन्मूलन करने से सभी के प्रयत्न ~~बहु~~ दरकार है। उसी प्रकार भेदभाव रखने वाली आदमियों से समूह में अकेलापन बनना एक अच्छा मार्ग है। इस विषय से भारत संविधान उस जातियों के खिलाफ कानून बनने के ~~व~~ बाद भारत में एकता आरंभ करते है। हमारा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की पहला स्वप्न है सभी लोग एकसाथ रहने को देखते है। उसको स्वप्न साकार करना भारत की सभी नागरिक की दायित्व है। युक्ति चिंता सबको एकसाथ बनने की और विकास करने के की एक रास्ता है। मानव की ~~सोह~~ सोच के अनुसार है उसका प्रर्वती। देश के विकास की अनुरूप हमारा सोच बदलाव देना बहुत अनिवार्य है।

⑥

यु. एन ओ मानव विकास लक्ष्य करते एक प्रस्ताव है। लगभग 170 राज्यों इस जत्थे से योजित है। धरती के सभी देशों को एक साथ होकर और इससे लिए उस देशों की संपूर्ण विकास बनना की इच्छा से यु. एन. ओ 1945 अक्तूबर 24 से शुरू आत होते हैं। लोग को युद्ध रुककर परस्पर भाईचारा से रहने की लक्ष्य से इस यूनियन सदा प्रवर्तन करते हैं। मनुष्य को मनुष्य की तरह समझने की आवश्यकता और हमारा आशा साकार करने के समय अन्य को नहीं दिक्कत बनने के आवश्यकता यु. एन. ओ लोग को समझती है।

केरल में कुडुंबश्री का प्रवर्तन भारत की एकता और ~~सब~~ सबका विकास का एक अच्छी असर है। समाज में नारियों का ~~प्रधान~~ प्रमुखता इस दल उसको प्रवर्तन के द्वारा व्यक्त करते हैं। महिलाओं की सभी स्वप्नों ~~स~~ वहाँ साकार करती है और उसको विकास के बदले उसको प्रवर्तन से समाज में अच्छी कार्य करती हैं। इसका प्रवर्तन सभी लोग से एक नमूना है। भारत पर आए पर्यटकों ने इस आश्चर्य को नतीजे थे उसको देश भी इसी तरह दलों अविष्कार करती है।

Code No 5

...2017-18 ...

मनुष्य की बुनियादी हक में एक है समाधान रूप से जीविन। आजकल गरीबों से इस अवकाश को कम करती है। व्यक्ति पूजा करके दलों ने उसको चूषण करते हैं। 'देर स्च्चा सौदा' के आविष्कार करने व्यक्ति गुरमीत राम रहीं सिंह. एक उदाहरण। कानून उसको अरेस्ट करने की वत तक बड़ी मात्रा में लोग उसको विश्वास करती है। उसको जैसे व्यक्तियों को उन्मूलन करना भारत की सभी विकास केलिए अनिवार्य है।

भारत के सभी हिस्सों से केरल अलग है। यहाँ लोग बहुत विकसित है। इसका प्रथम कारण केरल की साक्षरता है। यहाँ जाति प्रथा और भेदभाव बहुत कम है। केरल को एक अच्छी नमूने होते पर भारत सरकार इसके अनुरूप से कार्य क्रम करने तो बहुत अच्छे है।

आने वाले पीढ़ीयों की संरक्षण हमारा दायित्व है। इससे पूर्ति करने तक हमारा नारा यह है कि "भाईचारा विकास की रास्ता है"। सभी मानव आनंद से रहनेवाली भारत बहुत दूर नहीं है। हमारा प्रयत्न सभी के आधार है। एक अच्छा भावि बनने केलिए अच्छा चिंता अनिवार्य है। लोग की शांति और समाधान पर

सबका विकास अनिवार्य है। सबको अच्छी तरह रहने लोग आज के प्रयत्नों का फल है। इस स्वप्न बहुत नज़दीक है। एकता से रहने वाली भारत नागरिक भी है हमारा स्वप्न। साकार करने तो दिक्कत नहीं है। किंतु सबके साथ है सबका विकास।